UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 6.1 **June, 2023**

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by

VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh

email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

अनुक्रमणिका

▸	ज्योतिश्शास्त्रानुसारेण जलान्वेषणविज्ञानम् **डॉ. मधुसूदनमिश्रः**	1-6
▸	The Protection of Children from Abuse and Sexual Offences in International Perspective **Dr. Jyoti Singh**	7-10
▸	Adoption and Non-Adoption of Internet of Things (IoT) in the Banking Sector: A Discriminant Analysis Approach **Neerja Rai & Prof. Kushendra Mishra**	11-16
▸	New Delhi G20 Summit will Chart a New Path in the Human-centric and Inclusive Development: PM India's G20 **Dr. Md. Meraj Danapuri**	17-19
▸	Artificial Intelligence: An Analytical Study in Respect of Legal and Social Phenomena **Zakiya Ansari**	20-22
▸	An Analysis of Mgnrega in Azamgarh District of Uttar Pradesh **Surya Prakash Yadav & Dr. Sumit Saurabh Srivastava**	23-28
▸	भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली का बदलता स्वरूप **डॉ0 प्रभाकर सिंह**	29-31
▸	भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की भूमिका **डॉ0 सत्येन्द्र कुमार**	32-36
▸	माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन **संदीप कुमार पाठक एवं डॉ० कविता गुप्ता**	37-40
▸	युग–युगीन भारत चीन सम्बन्ध और मैत्री का परिप्रेक्ष्य (मिंग वंश एवं मंचू–वंश) **डॉ0 भारत सम्राट**	41-44
▸	भरत का अन्तर्द्वन्द रू एक अन्तर्यात्रा (प्रक्रिया और पाठ) **डॉ0 संजय कुमार जैन**	45-50
▸	अवधारणाओं की विसंगतियों में किन्नरों का विशिष्ट जीवन **डॉ0 विकास बंसल**	51-54
▸	Cyber Crimes against Women in India: A Legal Analysis **Prashant Kumar Chauhan**	55-60
▸	देहरादून जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर इंटरनेट के प्रभाव का अध्ययन **प्रो. डॉ. मालविका एस. कांडपाल एवं लीला**	61-66
▸	अशोक वाजपेयी के काव्य में रस विधान **डॉ0 प्रशान्त कुमार**	67-69

▸	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन **डॉ0 सुषमा अग्रवाल एवं आशिया खातून**	70-72
▸	हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र की उभरती गतिशीलता में भारत की रणनीतिक भूमिका **शिवम सिंह एवं डॉ0 जयकुमार मिश्र**	73-76
▸	An Assessment of Employment and Unemployment Status in Bihar and Jharkhand **Dr. Kanchan Singh**	77-84
▸	Law Relating Condition and Warranty: An Analysis **Mahesh kumar Pandey**	85-88
▸	Korean Music and Indian Milieu : A Study of Pluralizing Spaces in Indian Popular Culture **Sushmita Pandey**	89-93
▸	कैमूर जिला में आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन में शिक्षण संस्थाओं का योगदान : एक भौगोलिक अध्ययन **अर्चना कुमारी**	94-96
▸	विश्वनाथ राम की गोबरहा **डॉ0 प्रणव कुमार गौरव**	97-99
▸	ग्रामीण विकास में समावेशी विकास की भूमिका **डॉ0 ब्रह्मजीत सिंह**	100-102
▸	भारत में G20 सम्मेलन की सामाजिक समीक्षा **आदर्श बाला**	103-105
▸	Vignettes of Diasporic Consciousness in Monica Ali's *In the Kitchen* **Satish Kumar**	106-110
▸	रहीम के नीतिपरक दोहों की वैचारिक चेतना **डॉ0 अरुण प्रसाद रजक**	111-112
▸	चीन देश में बौद्ध न्याय का संक्षिप्त विवरण **छेतन यङ्क्यिद्**	113-116

रहीम के नीतिपरक दोहों की वैचारिक चेतना

डॉ. अरुण प्रसाद रजक
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, गोरुबथान गवर्नमेंट कॉलेज, कलिम्पोंग

हिन्दी नीति-काव्य जगत के अंतर्गत रहीम की अपनी खास पहचान है। नीति-काव्य की महता ही कुछ ऐसी होती है कि इस क्षेत्र में जो आते हैं, उनका झंडा कभी नहीं झुकता। वृद, गिरधर, बिहारी आदि कवियों ने नीति काव्य-जगत में जो स्थान बनाया, उसे किसी कीमत पर कलुषित नहीं किया जा सकता। आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में इन कवियों से आगे का स्थान रहीम को देते हुए कहते हैं 'रहीम के दोहे वृद और गिरधर के पद्यों के समान कोरी नीति के पद्य नहीं है।'[1]

रहीम के दोहों को हम स्कूलों से पढ़ते आ रहे हैं। तुलसी और रहीम दोनों ही समकालीन हैं और दोनों को जनकवि कहा जाता है। तुलसी का जीवन एकदम पारदर्शी है। राम की भक्ति में सब कुछ त्याग दिया और लेखक के रूप में अलग जीवन जिया: 'भगतन को कहाँ सिकरी सो काम'। जबकि रहीम अकबर के दरबार के नवरत्नों में एक थे और उनका पूरा जीवन युद्ध में बिता। दरबारी लिबास और तलवार चलाकर भी रहीम ने जो साहित्यिक योगदान दिया है, उसपर संदेह नहीं किया जा सकता है । क्योंकि रहीम के नीति परक दोहे अत्यधिक उपयोगी हैं। रहीम के दोहे की गहराई में जाने से पता चलता है कि उन्होंने नीति काव्य की काया ही बदल दी। यह इसलिए संभव हो सका क्योंकि उन्होंने सही मायने में जीवन को समझा। रहीम की प्रभावशीलता की थाती को स्वीकार करते हुए आचार्य शुक्ल लिखते हैं- "तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिन्दी भाषी भू-भाग में सर्वसाधारण के मुंह रहते हैं। इसका कारण है जीवन की सच्ची परिस्थितियों का मार्मिक अनुभव।"[2] आचार्य शुक्ल की इस टिप्पणी से आगे या कुछ अलग कह पाना कठिन है। कठिन इसलिए कि रहीम की जीवनानुभूति का इतना सही और सच्चा आकलन शायद ही किसी और ने किया हो। जिस तरह तुलसी की कविताएँ जीवन से विमुख नहीं है, लोकोन्मुख है, जीवन को सुखी और सार्थक बनाने के लिए है, उसी तरह रहीम की कविताएँ भी। रहीम भी तुलसी की तरह कठिन जीवन के सहज कवि हैं। सहजता एक नैतिक मूल्य है। वह अपने आप नहीं आती बल्कि सामाजिक संघर्ष के बीच पैदा होती है। रहीम की सहजता भी जीवन-संघर्षों से जुड़ी अनोखी कल्पना से उपजी है। रहीम जब कहते हैं- "जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग/चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।"[3] तो स्पष्ट कर देते हैं कि उत्तम प्रकृति वालों का बुरी प्रकृति वाले कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। कठिन परिवेश में रहकर भी सहज- स्वाभाविक चेतना की चमक कभी समाप्त नहीं होती। कविता में जीवनबोध का गाढ़ा महत्व होता है। उदात्त जीवनानुभूति के आलोक में ही कवि नैतिकता को ईजाद करता है। जीवन में मित्रता और शत्रुता दोनों भाव ही देखे जाते हैं। कौन मित्र है, और कौन शत्रु, इसकी पहचान तभी होती है, जब मनुष्य पर विपत्तियां आकर पड़ती है। उदात्त जीवनानुभव की रोशनी में ही रहीम ने विपत्ति को वरेण्य माना है -

"रहिमन विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय। हित अनहित या जगत में, जान परैं सब कोय ।।"[4]

सज्जनों की मित्रता लाभप्रद ही होती है, हानिप्रद कुछ भी नहीं होती। सज्जनों की मैत्री सायंकालीन वृक्षों की छाया के अनुरूप होती है, जो बढ़ती रहती है। ऐसे सज्जनों के रूष्ट हो जाने पर भी उन्हें एक बार नहीं, अनेक बार मनाना चाहिए -

"टूटे सज्जन मनाइये, जो टूटे सो बार । रहिमन फिर फिर पोइए, टूटे मुक्ता-हार ।।"[5]

हम उनके लिखे दोहों का गहनता से अध्ययन करें तो यह पाएंगे कि उन दोहों में समाज के प्रत्येक क्षेत्र का गूढ़ रहस्य भी छिपा हुआ है। आलोचक सदानन्द शाही कहते हैं- "उनमें नीतिबोध था पर वे केवल नीतिकार नहीं थे, उनमें सन्तई थी पर वे सिर्फ सन्त नहीं थे, श्रृंगार भी था पर वे सिर्फ श्रृंगारिक भी नहीं हो सकते थे। चाहें तो उन्हें नीति, श्रृंगार और वैराग्य कि त्रिवेणी बहाने वाले भर्तृहरि की परम्परा में रख सकते हैं।"[6]

सदिच्छा, नैातक किस्म की शिक्षा या उपदेशपरकता और सरल आशावाद की यहाँ अपनी बानगी है। नैतिक जिम्मेदारी का बोध हरदम और हरेक से नहीं उठाया जाता। बकौल मीर 'एक भारी पत्थर है।' नीतिकार के पास सच्चाई को सहने-समझने के लिए समर्पण की कोई कमी नहीं होती। प्रेम की गरिमा और महिमा को समझने वाला ही इतनी खरी-खरी बात कह सकता है कि प्रेम का पंथ अगम है, उसपर गमन करना हँसी-खेल नहीं। यथा -

"रहिमन मैन तुरग चढि, चलिबो पावक माहिं। प्रम पंथ ऐसा कठिन, सब कोउ निबहत नाहिं ।।"[7]

प्रेम में हृदय की सरलता अपेाक्षत है। रहीम में सरलता को समझने के लिए भावुकता अद्वितीय है। आचार्य

शुक्ल लिखते हैं - "अपने उदार ऊँचे हृदय को संसार के वास्तविक व्यवहारों के बीच रखकर जो संवेदना इन्होंने प्राप्त की है, उसकी व्यंजना अपने दोहें में की हैं।"[8] उदात्त भावों से परिपूर्ण होने के कारण ही रहीम सलाह देते हैं कि कभी भी प्रेम को मत तोड़ो। टूटने पर प्रेम या तो फिर जुड़ता ही नहीं है, और यदि जुड़ता है तो वह गांठ-गंठीला हो जाता है -

"रहिमन धागा प्रम का, मत तोरहु चटकाय। टूटे से फिर ना जुर, जुरे गांठ परि जाय।।"[9]

यहाँ काव्य-बोध में कलपना का झूठा खेल नहीं है। सच्ची प्रेम-जीवन की झलक है। आचार्य शुक्ल ठीक ही कहते हैं कि रहीम का हृदय द्रवीभूत होने के लिए कल्पना की ऊँची उड़ान की अपेक्षा नहीं रखता। संसार के सच्चे और प्रत्यक्ष व्यवहारों से तादाकार होने कारण उनकी कविताएं स्वतः स्फूर्त बन पड़ती है। इसलिए काव्य-वस्तु की 'प्रोसेसिंग' जैसी जटिल प्रक्रिया इतनी सहज-भाव से सम्भव हो पाती है। गरज यह है कि रहीम की कविता में न तो कोई हिकमतगीरी है, न ही किसी तरह का 'मैनेरिज्म'। हाँ, कविता में विरल स्वाभाविकता अवश्य है। इस स्वाभाविकता को परखने के लिए रहीम के निम्न दोहे की तफसील जरूरी है -

"बड़े बड़ाई ना करैं, बड़ो न बोलैं बोल। रहिमन हीरा कब कहैं, लाख टका मेरो मोल।।"[10]

अच्छे और बड़े लोगों का स्वभाव अहंकारविहीन होता है। वे जीवन में सहज होते हैं। वे अच्छे तथा परोपकारपूर्ण कार्य करके दूसरो को सुख तो पहुँचाते हैं, किन्तु अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते। जिस प्रकार हीरा अपनी बहुमूल्यता का वर्णन स्वयं नहीं करता। रहीम इसी 'सादगी' के कायल हैं। बड़प्पन की जड़ें अपनी जमीन में जितनी गहरी होगी, उसका आकाश उतना ही समुन्नत होगा। गौरतलब है कि रहीम इसके लिए विपुल शब्द-राशि को नहीं, 'खामोशी' को प्रस्तावित करते हैं। इसी को वे 'सादगी' कहते हैं, जिसके लिए किसी झील की तरह जीवन्त, गहरा और निर्मल होना जरूरी है। बात को और साफ करना हो, तो रहीम को यह दोहा हमारी कुछ मदद कर सकता है -

"रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून। पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।"[11]

पानी ही जीवन है। इसके बगैर जीवन भावनात्मक इकहरेपन का शिकार हो जाता है। जिस तरह हीरे की ताकत उसकी खामोशी है, उसी तरह मोती का मूल्य उसका पानी है। यहाँ अपनी भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए रहीम द्वारा 'पानी' जैसे सही शब्द की खोज ही शायद सबसे बड़ी खोज है। पानी या सादगी के उबरने पर मोती और मानुष मूल्यहीन हो जाते हैं। कवि इस गोपन आशय को कैसे प्रत्यक्ष करता है और कितनी सच्चाई और संजीदगी से कितने बड़े कैनवास पर उनका प्रतिकार कर सकता है, उपयुक्त दोहा इसका ही इम्तिहान है। यह इसपर निर्भर है कि उसका अनुभव कितना वास्तविक और विविध है, सत्य से इसका साक्षात्कार कितना मार्मिक है। रहीम का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य है - सच्ची अनुभूति को सहज-सरल आमलोगों की बोली में कहना। यही कारण है कि उनके दोहे जिन्दगी का सच उगलने में सक्ष्म हैं और जन-जन के प्यारे हैं। रहीम के इसी दम-खम लिए आचार्य शुक्ल को कहना पड़ा - "उनमें मार्मिकता है, उनके भीतर से एक सच्चा हृदय झांक रहा है। जीवन की सच्ची परिस्थितियों के मार्मिक रूप को ग्रहण करने की क्षमता जिस कवि में होगी वही जनता का प्यारा कवि होगा।"[12]

सन्दर्भ- सूचि :

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ- 129
2. वही, पृष्ठ- 129
3. http://kavitakosh.org/kk/रहीम_दोहावली _-_2 , दोहा-81
4. http://kavitakosh.org/kk/रहीम_दोहावली _-_5, दोहा- 249
5. सं० मिश्र सत्यप्रकाश, रहीम रचनावली, प्रथम संस्करण 2021, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, पृष्ठ सं०- 64
6. सं० त्रिवेदी हरीश, अब्दुर्रहीम खानेखाना : काव्य सौन्दर्य और सार्थकता, प्रथम संस्करण 2019, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं०- 71
7. http://kavitakosh.org/kk/रहीम_के_दोहे _-_3
8. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ- 129
9. सं० मिश्र सत्यप्रकाश, रहीम रचनावली, प्रथम संस्करण 2021, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, पृष्ठ सं०- 76
10. http://kavitakosh.org/kk/रहीम_दोहावली _-_3, दोहा संख्या-136
11. http://kavitakosh.org/kk/रहीम_दोहावली _-_4, दोहा संख्या- 219
12. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ- 129